International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 25-06-2023, Accepted: 11-07-2023, Published: 26-07-2023
Volume 9, Issue 4, 2023, Page No. 53-55

मुंशी प्रेमचंद और नारायण आपटे के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन के विविध आयाम

सायली सिद्धार्थ पवार
शोधार्थी, हिंदी विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय मुंबई महाराष्ट्र, भारत

सारांश
बीसवीं सदी आधुनिक भारतीय साहित्य के उत्थान की सदी है। उन्नीसवीं सदी के पुनर्जागरण का आधार लेकर इस सदी के साहित्य में लगभग सभी विधाओं ने एक स्वर में मानवतावाद का नारा बुलंद किया। उपन्यास भारतीय साहित्य में उन्नीसवीं सदी के यथार्थवादी विधा के रूप में विकसित हुआ। भारतीय उपन्यास पहले महायुद्ध के आसपास परिपक्व होना शुरू हुआ। मुंशी प्रेमचंद इस विधा के प्रतिनिधि रचनाकार माने जाते हैं।
जब भी साहित्य और सामाजिकता की बात होती है तब यही कहा जाता है कि इन सबकी शुरुआत यूरोप से हुई किंतु कई मायनो में मेरा मत इन सबसे कुछ अलग है। "उन्नीसवीं सदी में मुंबई में कार्नेलिया सोराबजी नामक पारसी लड़की ने बंबई विश्वविद्यालय से जब डिग्री प्राप्त की उस समय तक इंग्लैंड में कोई लड़की ग्रेजुएट नहीं थी।"[१] और जब कार्नेलिया वकालत करने इंग्लैंड गई तो वहाँ पर वह एकलौती लड़की थी। फ्रांस में छठे दशक में नारी मुक्ति आंदोलन की शुरुआत हुई जबकि १८७२ में ही रखमाबाई ने अपनी स्वतंत्रता की आवाज़ बुलंद की थी। भारतीय उपन्यासों में स्वतंत्र चेतना की महिलाएँ आज़ादी के पहले ही अपने अधिकारों के लिए आवाज़ उठाने लगी थी।
उन्नीसवीं सदी में ज्योतिबा और सावित्रीबाई फुले और महर्षि कर्वे जी के प्रखर नेतृत्व ने स्त्री स्वातंत्र्य और शिक्षा की नींव रखी। बीसवीं सदी के पूर्वार्ध में प्रेमचंद एक ऐसे रचनाकार थे जिनके नारी चरित्र परंपरा के चौखटों को तोड़कर बाहर निकलने की कोशिश करते दिखाई देते है। वहीं नारायण हरि आपटे जी के भी नारी पात्र परंपराओं की चौखटों को पार करते हुए मर्यादाओं को तोड़कर अपने अस्तित्व के लिए अपने परिवार और समाज से संघर्ष करती दिखाई देती हैं।

मूल शब्दः मुंशी प्रेमचंद, नारी जीवन, सामाजिक, समस्याओं

इक्कीसवीं सदी महिला सशक्तिकरण का दौर है। नारी मुक्ति आंदोलन तथा स्त्री विमर्श के परिप्रेक्ष्य में आज महिलाएँ लगभग सभी क्षेत्रों में युगांतकारी उपलब्धियाँ हासिल कर रहीं हैं। किंतु मुझे यह जानना जरूरी लगा आज से ठीक सौ साल पहले जब इन सबकी नींव रखी जा रही थी तब समाज और साहित्य में नारियों की क्या भूमिका रही होगी? मुंशी प्रेमचंद और नारायण हरि आपटे जी का दौर स्वाधीनता आंदोलन का था जिसमें तिलक जी के प्रखर और तेजस्वी व्यक्तित्व और गांधीजी की मानवतावादी विचारधारा जिनके प्रधान तत्त्व थे।
प्राचीन काल में भारतीय समाज में नारी को सम्माननीय स्थान प्राप्त था। कालांतर में नारी को अनेक सामाजिक अवरोधों की श्रृखंला में जकड़कर उसके स्वतंत्र अस्तित्व को समाप्त कर दिया गया। नारी जन्म से लेकर मृत्यु परांत समस्याओं से घिर गयी है। आधुनिक काल में नयी शिक्षा के साथ सामाजिक परिवर्तन हुए जिसके परिणाम स्वरूप नारी विषयक दृष्टिकोण भी बदलें गए। अनेक समाज सुधारकों ने नारी की दयनीय स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया। मुंशी प्रेमचंद और नारायण आपटे जी ने अपने उपन्यासों के माध्यम से नारी विषयक सभी समस्याओं को पाठकों के समक्ष रखा है। उनके साहित्य में विवाहपूर्व, विवाह के बाद और विवाहेत्तर जीवन में नारी की समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया गया है।
समाज सामाजिक संबंधों का जाल है। नारी और पुरुष दोनों ही समाज के अभिन्न अंग है। अपने वैवाहिक जीवन के नारी हमेशा समस्याओं से घिरी रहती है। आपटे जी के सभी स्त्री पात्र अपने जीवन में किसी न किसी समस्याओं से संघर्षशील रहती दिखाई देती है किंतु उनके सभी स्त्री पात्र सकारात्मक विचारों के है। उनकी नायिकाएँ संकटों पर मात करते हुए उसमें से रास्ता निकालती दिखती है।

मुंशी प्रेमचंद और नारायण आपटे जी का साहित्य संसार

हिंदी उपन्यास साहित्य के युगांतकारी लेखक मुंशी प्रेमचंद का जन्म बनारस से आजमगढ़ की ओर जानेवाली सड़क पर शहर से करीब चार मील दूरी पर स्थित 'लमही' गाँव में कृष्ण पक्ष की दशमी को संवत १९३७ अर्थात ३१ जुलाई सन १८८० को श्रीवास्तव कायस्थ परिवार में हुआ था। तथा श्री. नारायण हरि आपटे जी का जन्म ११ जुलाई १८८६ (शके १८११ आषाढ़ शुद्ध त्रयोदशी) गुरुवार को सांगली के नजदीक समडोली गाँव में हुआ। उनका गाँव बहुत ही छोटा था। वे जब डेढ़ साल के थे तब उनकी माँ गुजर गयी और वे मातृप्रेम से वंचित रह गये।
प्रेमचंद के साहित्यिक जीवन की शुरुआत सन १९०१ से होती है और साहित्य की सेवा का यह कार्य उनके जीवन के अंतिम क्षणों तक चलता रहा। बीमारी की अवस्था में भी वे लिखते रहते थे। देखा जाये तो वे सचमुच ही कलम के मजदूर थे। वे स्वयं कहते हैं, "मैं मजदूर हूँ और मजदूर को काम किए बिना खाने का अधिकार नहीं है।"[२] प्रेमचंद ने गद्य विधा की विविध विधाओं में अपनी लेखनी चलाई किंतु कहानी और उपन्यास के क्षेत्र में उन्हें अधिक ख्याति प्राप्त हुई। उन्होंने वैचारिक निबंध, अनुवाद, नाटक, जीवन चरित्र और बाल साहित्य आदि रचनाओं में भी अपनी कलम चलाई हैं। उपन्यासों के क्षेत्र में तो प्रेमचंद ने एक युग प्रवर्तक का काम किया है। प्रेमचंद के पूर्व जितने भी उपन्यास लिखे गये उन्हें हम उपन्यासों का शैशवकाल कह सकते हैं। प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य में प्रवेश करते ही जैसे उपन्यास साहित्य की नयी दिशा मिली। वे उपन्यास के क्षेत्र में युग पुरुष बनकर आये और युगप्रेरक बनकर उपन्यास साहित्य को समृद्ध किया।
सन १९०६ में उन्होंने अपना पहला उपन्यास 'अजिंक्य तारा' प्रकाशित किया। "१९१५ साल में 'आल्हाद' नाम की साप्ताहिक पत्रिका शुरू करके अपनी साहित्यिक सेवा महाराष्ट्र की शारदा माँ के चरणों में रख दी। १९१७ में वे कोरेगाव जिला सातारा में

रहते थे। उसी समय उन्होंने 'किर्लोस्कर' मासिक का सहसंपादन किया।"३ श्री आपटे जी ने वैचारिक लेखन, ऐतिहासिक उपन्यास, सामाजिक उपन्यास, सांसारिक कथाएँ, विद्यार्थियों के भविष्य को लेकर लिखे गए उपन्यास, अद्‌भुतरम्य उपन्यास, कथा वाड्मय, संपादन, उनके लेखन पर बनी फ़िल्में आदि पर विस्तृत लेखन कार्य किया है।

विषय विस्तार

मुंशी प्रेमचंद और नारायण हरि आपटे जी का अवतरण हिंदी कथा साहित्य के क्षेत्र में सन १६१८ से माना जाता है उस समय एक ओर विषम परिस्थितियों से जर्जर समाज था दूसरी ओर राजनीतिक आंदोलनों से भरा देश का वातावरण और तत्कालीन समाज को ऊँचा उठाने के लिए बड़ी–बड़ी शक्तियाँ काम कर रही थीं। दोनों महान रचनाकारों के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन को मैंने सामाजिक आयाम, शैक्षिक आयाम, सांस्कृतिक आयाम और राजनीतिक आयाम के द्वारा विश्लेषित किया है।

1. सामाजिक आयाम

उन्नीसवीं शताब्दी सुधारकों की सदी मानी जाती है। इस शताब्दी में भारतीय धर्म एवं समाजसुधारकों ने भारतीय समाज को जागृत करके उसका ध्यान अपने अंदर प्रचलित कुरीतियों के तरफ आकृष्ट कराया था। किसी समाज की सबसे छोटी इकाई व्यक्ति होता है और समाज में व्यक्ति की सत्ता या उसकी हैसियत उसके लिंग, जाति, संपत्ति अथवा पद के आधार पर निर्धारित होती है। बीसवीं सदी के पूर्वाध में भारतीय समाज में नारी की व्यक्तिगत सत्ता का कोई प्रश्न ही नहीं था क्योंकि नारी प्रायः पुरुष पर निर्भर हुआ करती थी फिर भी इन दो रचनाकारों ने अपनी रचनाओं में नारी को अधिकतम स्वतंत्रता देने का प्रयास किया। भारतीय समाज व्यवस्था में व्यक्ति के बाद परिवार संस्था आती है। जो व्यक्तियों के समूह से मिलकर बनती है। परिवार के केंद्र में भले ही पुरुष हो पर स्त्री की अस्मिता से इनकार नहीं किया जा सकता। आलोच्य रचनाकारों में अपने उपन्यासों में परिवार संस्था में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभानेवाली नारियों का चित्रण किया है।

परिवार व्यवस्था की धूरी नारी ही हुआ करती है। कृषक समाज में किसान पति से अधिक श्रम स्त्री करती है किंतु उसके श्रम को महत्त्व नहीं दिया जाता क्योंकि वह श्रम धन में रूपांतरित नहीं होता है। इसी तरह से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में स्त्रियों के श्रम का शोषण किया जाता है। पर उन्हें उसका प्रतिदान नहीं मिलता। बीसवीं सदी में आकर स्त्रियों के श्रम क्षेत्र में काफी विस्तार हुआ। शिक्षा और राजनीति से जुड़कर उन्होंने परंपरागत श्रम से हटकर नए क्षेत्रों में भी महत्त्वपूर्ण योगदान किया। प्रेमचंद ने स्त्री और पुरुष दोनों को एक दूसरे के पूरक कहा है, एक के अभाव में स्त्री और पुरुष दोनों की दुर्गति मानते है। 'गोदान' में भोला पत्नी के अभावजन्य कष्टों के अनुभव के बाद ही होरी से कहता है, "मेरा तो घर उजड़ गया, यहाँ तो एक लोटा पानी देने वाला भी नहीं है।"४

2. शैक्षिक आयाम

भारत में अपनी पकड़ मजबूत करते समय प्रशासन को दुरुस्त रखने के लिए ब्रिटिश सरकार और उसके अधिकारियों को नौकरशाह लोगों की जरूरत पैदा हुई जिसके लिए अंग्रेजी भाषा में पढ़ना–लिखने की शुरुआत हुई। उन्नीसवीं सदी में भारत में शिक्षा और सिखने के बारे में नए विचार उभरे। स्कूलों का निर्माण हुआ और पहले अशिक्षित क्षेत्रों में लोगों ने अपने बच्चों का दाखिला करवाना शुरू किया। हालाँकि उस समय भी लड़कियों की शिक्षा का काफी विरोध हो रहा था लेकिन कई लोगों में महिलाओं के लिए स्कूल स्थापित करने के लिए अनेकों कार्य किए है।

भारत में स्त्री शिक्षा की शुरुआत इसाई मिशनरियों से शुरू होती है। उन्हीं की प्रेरणा से महात्मा ज्योतिबा फुले ने स्त्री शिक्षा की नींव रखी जिसके लिए उन्हें अनेक तरह के विरोधों का सामना करना पड़ा। इसी के साथ आगे चलकर जिन चार विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई उन्होंने शिक्षा की क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की। ईश्वरचंद विद्यासागर, महात्मा गांधी, महर्षि कर्वे आदि के प्रयत्नों से स्त्री शिक्षा का विस्तार हुआ। इस दौर में शिक्षित नारियाँ ज्यादातर सामाजिक जनजागरण और राजनीतिक आंदोलनों में सहभागी होती रही। बहुत सारी महिलाओं को गांधीजी ने गाँवों में जाकर शिक्षा का प्रचार करने को कहा। सीमित शासकीय नौकरियों में तथा वकालत और चिकित्सक पेशे में स्त्रियों की उपस्थिति बढ़ती गई। जिसका उदाहरण हमें नारायण आपटे जी के 'साजणी' उपन्यास में नारी पात्र 'मंजुला' में दिखता है, "जो अपनी सौतेली साँस और पति के बीच अच्छा तालमेल बिठाकर पूरे घर को एक साथ जोड़ती हुई अपनी शिक्षा के प्रति भी जागृत दिखाई देती है।"५

सांस्कृतिक आयाम

संस्कृति, किसी समाज में गहराई तक व्याप्त गुणों के समग्र स्वरूप का नाम है, जो उस समाज के सोचने, विचारने, कार्य करने के स्वरूप में अंतर्निहित होता है। उन्नीसवीं सदी में भारतीय समाज धार्मिक अंधविश्वासों और सामाजिक रुढ़िवादी के एक दुश्चक्र में फँस गया था। महिलाओं की स्थिति सबसे अधिक चिंताजनक थी। समाज में बाल विवाह की प्रथा थी। उस समय कृषि उत्पादन पर्याप्त मात्रा में होता था। महात्मा गांधी, मोतीलाल नेहरु, लाला लाजपत राय जैसे नेताओं के आगमन से ही राष्ट्रीय भावना का विकास हुआ।

नारी के सांस्कृतिक दायित्व उसके घर से शुरू होकर राष्ट्र पर समाप्त होते है। ग्रामीण हो या शहरी, आदिवासी हो या महानगर, घर और उसके आसपास के परिवेश आदि के उत्थान में नारी ही अग्रणी होती है। तमाम लोक साहित्य और लोक नाट्य में नारी ही प्रधान रही है। भारत के ज्यादातर पर्व स्त्री केंद्रित होते है। पर्व और त्यौहारों की सारी तैयारियाँ, उसमें लगनेवाले सर उपादानों का निर्माण नारी द्वारा ही संपन्न होता है। शायद ही कोई भारतीय पर्व ऐसा होगा जिसमें नारी को महत्त्व न दिया गया हो।

राजनीतिक आयाम

बीसवीं शताब्दी के आरंभ में भारत सामाजिक दृष्टि से बहुत अधिक पिछड़ा हुआ था। राजनैतिक दृष्टि से भारत ब्रिटिश शासन के अधीन था। सभी प्रतिष्ठित और शक्तिशाली पद विदेशियों ने सँभाले हुए थे। अंग्रेज सरकार की नीतियों ने भारतीय जनता को निर्धन और पिछड़ा बता दिया। उनमें से कुछ नेता स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे महान संतों के बौद्धिक विचारों से लोग प्रभावित होने लगे। जमींदार कृषकों के साथ दुर्व्यवहार किया करते थे। अंग्रेजी हुकुमत फूट डालने और शासन करो की नीति में विश्वास रखते थे। उन्होंने विभिन्न संप्रदायों में फूट डलवाकर सांप्रदायिक हिंसा को बढ़ावा दिया। हिंदू और मुसलमानों के विरुद्ध और मुसलमानों के हिंदूओं के विरुद्ध भड़काना शुरू किया।

भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा है। आधुनिक भारत में महिलाएँ, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री, लोक सभा अध्यक्ष, प्रति पक्ष की नेता आदि जैसे शीर्ष पदों पर आसीन हुई है जबकि उन्हें पिछली सदी में उनकी उपस्थिति नगण्य मानी जाती थी। भारत में प्रमुख स्त्री राजनायिकों में सावित्रीबाई फुले, फातिमा शेख जिन्होंने स्त्री शिक्षा में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। पंडिता रमाबाई, कामिनी रॉय, सरलादेवी चौधुरानी जो प्रारंभिक नारीवादी और भारत की पहली महिला संगठनों में एक 'भारत महिला महामंडल' की संस्थापक थी। सरोजिनी नायडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, हंसा मेहता, विजयालक्ष्मी पंडित, उषा मेहता, बेगम हजरत महल, एनी बेसंट, मैडम भीकाजी कामा, अरुणा

असफअली, कस्तूरबा गांधी आदि राजनायिका भी इस युग में उभरकर आई।

आलोच्य काल में महिलाओं को बोलने की भी अनुमति नही थी तो चुनाव लढने की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। किंतु समय के साथ जब परिवर्तन होने लगे तो उन्हें भी सक्रिय रूप में सामने न लाकर उनको केवल उम्मीदवार रूप में खड़ा करके सारे कार्य का दायित्व ने स्वयं पर लिया था।

निष्कर्ष

मुंशी प्रेमचंद और नारायण आपटे के उपन्यासों में चित्रित नारी जीवन के विविध आयाम जिसमें दो युगांतकारी रचनाकारों के साथ ही उनके समय, संस्कृति, देशकाल और वैचारिक पद्धति को समझने का प्रयास किया गया है। हिंदी और मराठी के इन दो बड़े रचनाकारों के माध्यम से भाषिक संस्कृति का एक नया आयाम जानने में मदद मिलेगी किंतु ये दोनों बड़े रचनाकार भाषा और संस्कृति का शत–प्रतिशत प्रतिनिधित्व नहीं करते। इनका समस्त जीवन उनकी अभिव्यक्तियों की मूल प्रेरणा होती है। अतः चाहे कितना भी समर्थ और महान रचनाकार हो उसके आधार पर किसी भाषा का समस्त जातीय मूल्यांकन करना संभव नहीं होता। तत्कालीन उपन्यास साहित्य को देखते हुए यह निर्विवाद रूप से बोल सकते हैं कि मानवीय चरित्रों को एक व्यापक पृष्ठभूमि देने का श्रेय मुंशी प्रेमचंद और नारायण आपटे जी को प्राप्त हुआ है। मानव जीवन का व्यापक चित्रण, उनकी सामाजिक समस्याओं का चित्रण, दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, जीवन जीने का उद्देश्य, आदर्शवाद आदि उनके उपन्यासों का मुख्य विषय रहा है। नारी पात्रों में नायिका का प्रमुख स्थान होता है। उपन्यास में नायिका सिर्फ प्रेयसी और पत्नी नहीं होती बल्कि नायिका की सर्वथा भिन्न सत्ता होती है और इसका चित्रण प्रेमचंद और आपटे जी के उपन्यासों में दिखाई देते है।

संदर्भ सूचि

1. Encyclopedia of Indian Events or Dates – S.B. Bhattacharya, 2009 – Sterling Publication- पृ. ११८
2. चक्रवाक त्रैमासिक, अंक ५ – जुलाई–सितंबर २००५ – पृ. ७८
3. ना.ह. आपटे–व्यक्ति आणि वाङ्मय–डॉ. सौदामिनी चौधरी–डायमंड प्रकाशन–पृ. २
4. प्रेमचंद घर में–शिवरानी देवी–पृ. १६२
5. ना.ह. आपटे–व्यक्ति आणि वाङ्मय–डॉ. सौदामिनी चौधरी–डायमंड प्रकाशन–पृ. ७२
6. आधुनिक भारत की सामाजिक पृष्ठभूमि – ए.आर.देसाई
7. स्त्री संघर्ष के सौ वर्ष – राधा कुमार